पाश्चात्य कला–यथार्थवाद से व्यक्तिवाद तक

डॉ0 सुनीता शर्मा,

असिस्टेंट प्रोफेसर–ललित कला विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ

19वीं शताब्दी में हुए वैज्ञानिक आविष्कारों और खोजों की चरम उपलब्धि ने चित्रकला को भी नई दिशायें प्रदान कीं। एक देश का दूसरे देश से सम्पर्क बढ़ा, जिससे कलाकारों में नई सोच विकसित हुई। इस दौर के वैज्ञानिक प्रभुत्व ने कलाकारों को 'तर्क' का दर्शन दिया। यानि कल्पना का स्थान तर्क ने ले लिया और प्रकृति, प्रेरक बिन्दु बनकर उभरी। फ्रांस के ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के कलाकार प्रकृति अथवा घरेलू विषयों के यथार्थ पर कार्य कर रहे थे। वस्तुगत विशेषता का अभिव्यंजना की प्रवृत्ति कला में ही नहीं साहित्य एवं नाटकों में भी सशक्तता से उभरी। वैज्ञानिक नियमों ने आत्मचिंतन या कल्पना के तात्विक गुणों का लोप करके सृजन का उद्देश्य बनाया। इस नवीन शैली को रियलिज्म (यथार्थवाद) से परिभाषित किया गया। पूर्वाग्रहों से पूरी तरह भिन्न यह 1850 में प्रमाणिक यथार्थवाद स्वीकृत हो गया था।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में फ्रांसीसी कलाकारों ने नवीन दृष्टि दी। प्रकृति चित्रण सशक्त रंगयोजना से पूर्ण यथार्थ चित्रण आभासमय स्वरूप में अंकित 'माने' कलाकारों का ध्येय बना। 1874 में 'माने' की 'इम्प्रेशन सनराइज' चित्र से इम्प्रेशनिज्म का जन्म हुआ। मोने, माने पिसारो, सिसली, रिनॉयक, देगा इस सम्मेलन में सम्मिलित हुए, जिसमें रंग और प्रकाश का वैज्ञानिक अध्ययन एवं विशुद्ध रंगो का प्रयोग ब्लैक एवं कृत्रिम रंग का बहिष्कार रंगो का तूलिका द्वारा बड़े–बड़े पैच में लगाना दूर और समीपस्थ का भ्रम उत्पन्न हो अर्थात् आप्टिकल मिक्सचर (दृष्टि भ्रम) तकनीक का प्रभुत्व जिससे वातावरणीय गति चित्रों में उत्पन्न हुई।

प्रभाववाद की प्रतिक्रिया स्वरूप पोस्ट–इम्प्रेशनिज्म उत्तर (प्रभाववाद) में आत्म अनुभूति और काल चिंतन के बल पर रंग एवं आकार को बल मिला। इसी युग में समकालीन सामने आया 'एक्सप्रेशनिज्म' (अभिव्यंजनावाद)। जिसमें गोगा शीर्षस्थ कलाकारों में मान्य हुए। उनका अपना मौलिक दर्शन था। शान्ति की खोज उनकी कला यात्रा थी। उनका 'तहितियन नारी' का मौलिक चित्रण सादे सपाट बड़े–बड़े आयतों में भरे गये रंगों के आविष्कारक प्रत्येक चित्र में आकर्षण उत्पन्न करते हैं। इसीलिए गोगा को प्रतीकवादी कलाकार भी कहा गया। इसी 'वाद' के अन्तर्गत दूसरे अग्रज कलाकार वॉन गॉग मानवता के अभिव्यंजक थे। अभावग्रस्त कोयले खान के मजदूरों के बीच रहकर प्रारम्भ में अपने चित्रों में जीवन की विभिषिका को जगह दी। 17वीं शताब्दी का रेम्ब्रॉ इनकी आस्था का अध्ययन था। अन्त तक गॉग की अभिव्यंजना शक्ति शिथिल नहीं होने पायी थी। यह अलग बात है कि निराशा एवं क्रोध में उन्होंने अपने कान काट दिए। अभिव्यंजनावाद 1905 ई0 में जर्मनी में जर्मनी में पनपा, जिसका उद्देश्य आंतरिक अनुभूतियों की बाह्य अभिव्यक्ति था।

19वीं शताब्दी के अंतिम दशक का एक आन्दोलन 'नव' प्रभाववाद या 'बिन्दुवाद' के रूप में मान्य हुआ। इस तकनीक का सिद्धहस्त कलाकार सीरा था। अपनी तकनीक पर प्रकाश

डालते हुए उसने एक पुस्तक भी लिखी 'फ्राम डेलाक्राक्स टू नियो–इम्प्रेशनिज्म'।

तमाम आन्दोलनों के प्रतिक्रिया स्वरूप एक साहित्यिक आन्दोलन 'सिम्बोलिक मूवमेंट' (प्रतीकवाद आन्दोलन) चित्रकला से भी जुड़ा, जिसमें गोगा के चित्रों में धार्मिक तत्व एवं कुछ अन्धविश्वास के तत्व ने समीक्षकों से गोगा के चित्रों का प्रतीकवाद से जोड़ा। इसमें कुछ युवा कलाकार ससेक्स, बोनार्ड, विलियर्ड आदि सक्रिय हुए।

20वीं शताब्दी के प्रारम्भ में 1905 में पेरिस में एक प्रदर्शनी में कलाकारों ने स्वयं को जंगली बर्बर (फाव) कहा इससे 'फावविज्म' जन्मा। जो इस आन्दोलन का मुख्य गुण था। अप्राकृतिक आकस्मिक रंगों का प्रयोग। इसके शीर्षस्थ कलाकार मातीस का विश्वास था चित्र के अंतः और बाह्य का सांमजस्य ऐसा हो कि स्वप्निल वातावरण प्रस्तुत हो सके। यह आन्दोलन 1905 से 1910 तक ही चला।

20वीं शती के प्रारम्भ में ही 1909 में नवीन वाद ने जन्म लिया 'क्यूविज्म'। क्यूबिस्टिक कलाकारों ने आकार को सरल बनाकर ज्यामितीयता प्रदान कर रंगों के घनत्व को महत्व प्रदान किया। पिकासो इसका शीर्षस्थ कलाकार 1909 से 1940 तक इस काल में सक्रिय रहा जिसमें उसके साथी कलाकार ब्रॉक आदि थे। अफ्रीकन शिल्प का पिकासो पर अत्यधिक प्रभाव था। 1911 में क्यूबिज्म अपने चरमोत्कर्ष पर था जिसे 'एनालिटिकल क्यूबिज्म' कहा गया। क्यूबिज्म का वास्तविक उद्देश्य वस्तुगत और व्यक्तिगत विशेषताओं को नये स्वरूप में द्रुतगति से प्रस्तुत करना। यहीं से पिकासो अमूर्तता की ओर उन्मुख हुआ। उन्होंने चित्रों में अन्य सामग्री पेपर कटिंग, वस्त्रों के टुकड़े, तांबे अथवा अन्य मेटलिक वस्तुओं का प्रयोग कर 'सिन्थेटिक क्यूबिज्म' को जन्म दिया। इसका प्रभाव समस्त योरोप पर ही नहीं पड़ा बल्कि पोस्टर, स्टेन सज्जा, शिल्प, स्थापत्य आदि पर भी व्यापक रूप में पड़ा।

पेरिस में क्यूबिज्म का आरम्भ हुआ और इटली में एक नवीन आधुनिक कला का आरम्भ ''भविष्यवाद'' (फ्यूचरिज्म) से हुआ। उनका उद्देश्य भविष्य की संभावना का.....

कला प्रगति पर विचार–परम्परा एवं पुरातता पर प्रतिघात–लेखकों, कवियों के साथ 20 फरवरी 1909 को एक नवीन यांत्रिक संसार की कल्पना की। बोसेनी, रूसेलो आदि इसके सक्रिय कलाकार हुए।

प्रथम विश्व युद्ध की विभिषिका के फलस्वरूप लेखकों, कवि, पत्रकार, चित्रकार, शिल्पकार आदि ने नवीन 'वाद' की स्थापना की 'दादाइज्म'। जिसमें 'मोनालिसा' के चित्र को दाढ़ी मूछों के साथ दर्शाया गया आदि।

कुछ कलाविदों ने इस वाद को 'अतियथार्थवाद' (स्योरिलिज्म) का ही एक भाग माना है। ''अतियर्थाथवाद'' का दूसरा स्वरूप कलाकार अधिसप्त अवस्था की मानसिकता का चित्रण जिसे सर्वप्रथम फ्रायड ने सिद्धांत स्वरूप प्रयुक्त किया था। सेल्वाडॉर डाली ने हिप्नोटिज्म, जादुई प्रभाव को महत्व दिया। मैम्न हर्ट ने फर्श एवं भित्ति पर, धुंधले निशानों को सृजन का माध्यम बनाया। अरनेस्ट ने रंग बहाकर, जॉन मेरो ने मांटेसरी बच्चों की स्वतंत्र भाषा में चित्रबद्ध किये। अर्थात् द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् बाह्य संसार की क्षणभंगुरता से दूर आत्मिक चेतना की अभिव्यक्ति, आत्म संघर्ष एवं कुंठाओं की बाह्य अभिव्यक्ति ही इस वाद का वास्तविक यथार्थ है।

इसके पश्चात् वाद की क्रिया प्रतिक्रिया ने फलस्वरूप 'शुद्धवाद' एलिमेंटिज्म, मार्डन प्रिविटिज्म, मेटाफिजिकलिज्म, पाप आर्ट आदि अनेक आन्दोलन फ्रांस में ही नहीं योरोप के अन्य देश में विकसित हुए। परन्तु आज यद्यपि सेटेलाइट, इन्टरनेट ने अन्तर्राष्ट्रीय कला सौन्दर्य

बोध का दायरा भी समिति कर दिया है और आज पश्चिम में किसी 'वाद' का प्रादुर्भाव सम्भव नहीं हो पा रहा है। क्योंकि चित्र सृजन की व्यावसायिकता, कलाकारों की प्रतिस्पर्धा ने सम्पूर्ण विश्व की कला एवं कलाकार को 'व्यक्तिवाद' में परिणित कर दिया ळें

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाश्चात्य कला–डॉ0 ममता चतुर्वेदी
2. यूरोपीय चित्रकला का इतिहास–रवि साखलकर
3. The History of world Painting
4. P Francastel
5. G.C. Argan
6. Michael Levey
7. 7-Encyclopedia of world Ant

Copyright © 2017, Dr. Sunita Sharma. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.